मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध : एक अध्ययनú

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के
मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रारूपण

:: शोध–छात्रा ::

सरिता मनोहर डोंगरे

पीपल्स कॉलेज, नांदेड

:: शोध–निर्देशक ::

डॉ. विजय शिवराम पवार

सहाय्यक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक ü

हिंदी विभागüüü

श्री गुरू बुध्दिस्वामी महाविद्यालय, पुर्णा (जं.)

तहसील पुर्णा जि. परभणी (महाराष्ट्र)

2023

मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध :

एक अध्ययन

- विषय प्रवेश
- विषय चयन और पृष्ठभूमि
- अनुसंधान कार्य के पूर्वानुमान
- अनुसंधान कार्य का महत्व
- अनुसंधान क्षेत्र
- अनुसंधान की प्रविधियां
- अनुसंधान की सीमाऍं
- अनुसंधान की रूपरेखा

प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

द्‌वितीय अध्याय : मधु कांकरिया का व्यक्तित्व और कृतित्व

तृतीय अध्याय : महानगरीय जीवन का सैध्दांतिक स्वरूप

चतुर्थ अध्याय : इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन बोध की परंपरा और मधु कांकरियां

पंचम् अध्याय : मधु कांकरिया के उपन्यास और महानगरीय सामाजिक समस्याएं

षष्ठम् अध्याय : मधु कांकरियां के उपन्यास और महानगरीय जीवन मूल्य संस्कृति

सप्तम् अध्याय : मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन की प्रासंगीकता और सुझाव

- उपसंहार और निष्कर्ष

संदर्भग्रंथ सूची

मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध : एक अध्ययन

- विषय प्रवेश (**Introducation**) :

वैश्वीककरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप शीघ्रता से निर्माण हुए महानगर तथा महानगर में बसनेवाला मनुष्य और उसकी जीवनानुभूति ने साहित्य एवं साहित्यकारों को अपनी ओर आकर्षित कर सोचने के लिए बाध्य किया कि महानगरीय जीवन क्या, कैसा और क्यों हैं? इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू कौन से हैं? परंतु इन सबसे प्रभावित होकर साहित्यकारों ने विचार–विमर्श के पश्चात साहित्य की विविध विधाओं के द्वारा 'महानगरीय बोध' को पर्याप्त मात्रा में अभिव्यक्त किया है। नतीजा, इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में तीव्रता से अंकित हुए इस महानगरीय बोध ने उषा प्रियवंदा, अलका सरावगी, ममता कालिया, सुषमा बेदी, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, सुधा अरोडा इन प्रमुख महिला उपन्यासकारों के साथ ही मधु कांकरियां को भी अपने उपन्यासों में महानगरीय बोध को चित्रित करने के लिए प्रेरित किया है।

मधु कांकरियां का जन्म 23 मार्च, 1957 को सुप्रसिध्द महानगर कलकत्ता में एक निम्न मध्यवर्गीय जैन परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा–दीक्षा भी इसी शहर में हुई है। कलकता शहरी महानगरीय जीवन बोध को उन्होंने काफी करीबी से देखा, परखा और समझा भी है। इसलिए उनके उपन्यासों में महानगरीय जीवन की समस्याएं, महानगरीय जीवन की त्रासदी, महानगरीय सभ्यता और संस्कृति का यथार्थ रूप में परिलक्षित होता हुआ पाठक देख सकते हैं। मधु कांकरियां ने अपनी उपन्यासों के द्वारा यह संकेत देने की पूरी कोशिश की है कि महानगरीय जीवन में जीवन जिनेवाला मनुष्य कई समस्याओं से जूझ रहा है और अपनी सांस्कृतिक मूल्यहीनता का प्रदर्शन भी दिखा रहा है। जो भारतीय सभ्यता की दृष्टि से और मानवीय जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में भी सोचने की

आवश्यकता है। इसी सामाजिक सरोकार को निभाते हुए लेखिका मधु कांकरिया ने अपने महानगरीय जीवन बोध का चित्रण कई उपन्यासों में किया है। जैसे– 'खुले गगन के लाल सितारे' (2000), 'सलाम आखिरी' (2007), 'पत्ताखोर' (2005), 'सेज पर संस्कृत' (2008), और 'ढलती सांज के सूरज (2022) इन सभी प्रमुख मौलिक उपन्यासों के जरिए मधु कांकरिया ने महानगरीय वेश्या जीवन, महानगरीय युवाओं में नशापान, महानगरीय जीवन में धार्मिक आंडम्बर का व्यापार, महानगरीय नक्सली समस्याओं को यथार्थ और संवेदनशील रूप में चित्रित किया है। इसलिए प्रस्तुत विषय की आज भी महानगरीय जीवन की प्रासंगिकता सटीक रूप में देखने को मिलती है।

- **विषय चयन और पृष्ठभूमि (Backgrond) :**

इक्कीसवीं सदी की संवेदनशील और सामाजिक सरोकार को लेकर चलनेवाली लेखिका मधु कांकरिया का नाम आज हिंदी महिला लेखन परंपरा में एक वरीष्ठ लेखिका के रूप में आदर से लिया जाता है। क्योंकि मधु कांकरिया ने मारवाडी समाज से ताल्लूक रखते हुए भी उसके दूराग्रहों से बाहर निकलकर लेखन किया है। यही चीज उन्हें मारवाडी लेखिकाओं से अलग करती है। उन्होंने अपने साहित्य में हजारों वर्षों की प्रताड़ना सहकर सामाजिक संकीर्ण मान्यताओं, रूढ़ियां, रीति रिवाज, नैतिकता के बंधनों, पितृता के दोहरे मानदण्डों के विरूध्द खडे होकर विभिन्न चुनौतियों को स्वीकारते हुए अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है।

मधु कांकरिया ने अपने साहित्य में अपनी सामाजिक और शहरी अनुभूतियों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया है। उनके साहित्य में महानगरीय जीवन का कोई भी अंश भी वर्जित और अस्पृश्य नहीं है। गांव की सडती गलियों से लेकर महानगर के रिश्ते, अंधेरे और वेश्यालयों के

नरक उनके लिए कुछ भी वर्जित नहीं है। महानगरीय समाज का जो चित्र है, वही यथार्थ बनकर उनके उपन्यासों में आता है। महानगरीय जीवन में वेश्याओं और वेश्यावृत्ति, युवाओं में बढ़ती नशे और ड्रंग्स की लत, नैतिक पतन, अंधविश्वास, बेरोजगारी और महानगरीय जीवन की अंधी दौड जैसे चित्रित समस्याओं से मैं काफी विचलित हुई। मेरे सामने 'खुले गगन के लाल सितारे' और 'सलाम आखिरी' उपन्यासों को पढ़ने के बाद कई सुलगते हुए सवाल खडे हुए और मैं सोचने पर मजबूर हुई की महानगरीय चमचमाती दुनियां की इतनी भयावह और त्रासदीभरी जिंदगी है। क्या सचमुच महानगरों के कारण ही भारत शक्तिशाली बनेगा? आर्थिक उन्नत्ति को ही हमने उन्नति का मानक माना है, तो हमारे समाज जीवन का क्या होगा? इसकी चित्ता इक्कसवीं सदी की मधु कांकरियां ने अपने उपन्यासों में की है। उनकी यही सकारात्मक सोच और महानगरीय जीवन की चिन्ता से मैं प्रभावित होकर अनुसंधान के लिए मधु कांकरियां के उपन्यासों को चयन करके उसका सार्थक शीर्षक– **मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध : एक अध्ययन** दिया है।

- **अनुसंधान का उद्देश्य (Objective of the study) :**

संसार में कोई भी कार्य बिना प्रयोजन के नहीं होता। अर्थात किसी भी कार्य के पीछे कार्य कारण भाव होता है। अनुसंधान भाव भी इस कार्य–कारण भाव से अछूता नहीं है। क्योंकि बगैर उद्देश्य (Objective) के अनुसंधान कार्य दिशाहीन होता है। इसलिए अनुसंधान कार्यप्रणाली में निश्चित उद्देश्यों को आवश्यक माना है। परिणामी **मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध : एक अध्ययन** इस अनुसंधान के निम्नांकित उद्देश्यों को सुनिश्चित किया है।

1. मधु कांकरियां के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करना।

2. भारतीय परिप्रेक्ष्य में महानगरीय जीवन बोध के सैध्दांतिक पक्ष को जानना।
3. इक्कीसवीं सदी की महिला लेखन परंपरा को महानगरीय जीवन बोध के रूप में परिलक्षित करना।
4. इक्कीसवीं सद की महिला लेखिका मधु कांकरिया का साहित्यिक स्थान और मौलिकता का अध्ययन करना।
5. मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय सामाजिक जीवन तथा परिवेश का अध्ययन करना।
6. मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
7. मधु कांकरियां के उपन्यासों के द्वारा महानगरीय संस्कृति का अध्ययन करना है।
8. मधु कांकरिया के उपन्यासों के माध्यम से महानगरीय जीवन बोध का अध्ययन करना।
9. मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन की प्रासंगिकता और मधु कांकरियां के सुझाओं का भी अध्ययन करना।

- **अनुसंधान कार्य के पूर्वानुमान (Hypothesis of the study) :**

अनुसंधान कार्य प्रणाली अथवा अनुसंधान कार्य के लिए पूर्वानुमान या समकक्षी निष्कर्ष प्रतिपादित किए जाते हैं। जिससे प्रस्तुत अनुसंधान को निश्चित दिशा प्राप्त होती है। परिणामस्वरूप अनुसंधान कार्य सफलता की ओर बढ़ता है। इसलिए प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए कार्यवाहक रूपी पूर्वानुमान निर्धारित किए है–

1. महानगरीय चमचमाती दुनियां के पीछे कई समस्याओं की वेदना, त्रासदी चूपी होती है।

2. भारतीय परिप्रेक्ष्य अगर देखा जाय तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप शीघ्रता से महानगरीय जीवन बना और महानगरों में बसनेवाला मनुष्य भी।
3. कलकता जैसै महानगर में जन्मी लेखिका मधु कांकरियां ने महानगरीय जीवन बोध को काफी करीब से देखा और परखा भी है और वही यथार्थ बनकर उनके उपन्यासों में भी चित्रित हुआ है।
4. मधु कांकरिया ने महानगरीय सामाजिक जीवन अथवा परिवेश में पनपती रही वेश्यावृत्ति, बेरोजगारी, युवाओं में नशा की लत, नक्सली और नारी शोषण की संकीर्ण मानयताओं के साथ मानवीय जीवन की त्रासदी को वास्तविक रूप में रेखांकित किया है।
5. लेखिका के उपन्यासों में महानगरीय सभ्यता और संस्कृति का गीरता स्तर काफी चिन्ता व्यक्त करनेवाला है।
6. व्यापार और आर्थिक उन्नति के पीछे अंधी दौड में दौडनेवाला महानगरीय समाज और मनुष्य अपनी मनुष्यता खोता हुआ परिलक्षित होता है। यही सच लेखिका के उपन्यास बयान करते हैं।
7. मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित पात्र वर्तमान महानगरीय समाज के प्रतिनिधिक रूप में झलकते हुए नजर आते हैं।
8. मधु कांकरियां के उपन्यास पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करते है हम आर्थिक उन्नति के लिए मानवीय सभ्यता और संस्कृति को भूल गये है।
9. मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याओं की महानगरीय मूल्यहीन संस्कृति की प्रासंगिकता आज भी परिलक्षित होती है।

10. मधु कांकरिया अपने उपन्यासों के माध्यम से महानगरीय सामाजिक समस्याओं को चिन्तन और आंखों देखा हाल चित्रित तो करती है, लेकिन इन समस्याओं का उचित समाधान भी वैचारिक और तार्कीकता के आधार पर देती है।

- **अनुसंधान का महत्व या उपयोगिता (Singnificance) :**

अनुसंधान किसी समस्या के समाधान के लिए किया जाता है, ताकि भविष्य में ऐसी स्थितियों या परिस्थितियों का सामना किया जा सके। प्रस्तुत अनुसंधान की उपयोगिता निम्नांकित दृष्टि से निर्धारित की जा सकती है–

1. महानगरीय जीवन के सैध्दांतिक पक्ष की विस्तार से जानकारी यह प्रस्तुत अनुसंधान की उपयोगीता है।
2. मधु कांकरियां के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्रस्तुत अनुसंधान का मौलिक लक्ष्य है।
3. इक्कीसवीं सदी के हिंदी महिला लेखन परंपरा का विस्तार से अध्ययन यह भी क्रमगत उपयोगिता इस अनुसंधान से परिलक्षित होगी।
4. मधु कांकरियां के उपन्यासों के जरिए महानगरीय परिवेश का यथार्थ दर्शन होगा।
5. मधु कांकरिया के विविध हिंदी उपन्यासों की और उस उपन्यासों में चित्रित केंद्रिय विषय तथा पृष्ठभूमि का परियच होगा।
6. मधु कांकरिया के उपन्यासों के द्वारा महानगरीय सामाजिक समस्याओं का बोध होगा।
7. मधु कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन की प्रासंगिकता और सुझाव काफी मौलिक साबीत होंगे।

- **अनुसंधा का क्षेत्र (Fleld of Research) :**

प्रस्तुत अनुसंधान के अध्ययन क्षेत्र के रूप में इक्कीसवीं सदी की हिंदी महिला उपन्यासकार मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध का अध्ययन करना है। और प्रासंगिकता के रूप में वर्तमान महानगरीय जीवन का ब्यौरा कई सरकारी अकडों के द्वारा विश्लेषित किया जायेगा। इसलिए वर्तमान कालीन महानगरीय जीवन का बोध देनेवाले पत्र–पत्रिकाएं, सरकारी अकडों का भी अध्ययन क्षेत्र के रूप में विश्लेषित किया जायेगा।

- अनुसंधान की प्रविधियां (**The Methodoly Comprising**) :

ज्ञान तथा खोज का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसके अध्ययन के लिए अनुसंधान के अनुसार निश्चित कार्य पध्दतियों को अपनाया जाता है। इसलिए प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नांकित अनुसंधान प्रविधियों का उपयोग किया जायेगा।

1. आलोचनात्मक अनुसंधान प्रविधि
2. तुलनात्मक अनुसंधान प्रविधि
3. विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रविधि
4. व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रविधि

- अनुसंधान की सीमाएं (**Renge of Research**) :

हर अनुसंधान की कुछ निश्चित सीमाएं होती है और उसी सीमा में रहकर ही अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान कार्य को सफल करना पड़ता है। इसलिए प्रस्तुत अनुसंधान के शीर्षक के अनुसार निम्नांकित सीमाएं निर्धारित की जाती है–

1. भारतीय महानगरीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में महानगरीय जीवन बोध के सैध्दांतिक पक्ष का अध्ययन किया जायेगा।

2. इक्कसवीं सदी की महिला लेखन परंपरा और उस परंपरा में मधु कांकरियां का योगदान और साहित्यिक स्थान का अध्ययन किया जायेगा।
3. मधु कांकरिया के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया जायेगा।
4. मधु कांकरिया के सीर्फ हिंदी उपन्यासों का और उसमें चित्रित महानगरीय जीवन का ही विस्तार से अध्ययन होगा।
5. मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध की प्रासंगिकता को दर्शाने हेतु वर्तमान पत्र–पत्रिकाओं के सरकारी अंकड़ो का विस्तार से विश्लेषणात्मक अध्ययन होगा।

- **अनुसंधान की रूपरेखा (Plan of Research) :**

प्रस्तुत अनुसंधान क विषय शीर्षक के अनुरूप ही अनुसंधान की रूपरेखा को तैयार करने की पूरी कोशिश की है। **मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन बोध : एक अध्ययन** इस शीर्षक की दृष्टि से प्रस्तुत अनुसंधान सप्तम् अध्यायों में विभाजित किया है–

प्रथम अध्याय– प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्याय अनुसंधान प्रविधि पर होने के कारण अनुसंधान की पृष्ठभूमि, अनुसंधान का उद्देश्य, पुर्वानुमान, महत्व, क्षेत्र और रूपरेखा इन आदि बिंदुओं पर विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय– मधु कांकरिया का व्यक्तित्व और कृतित्व :

प्रस्तुत अनुसंधान का दूसरा अध्याय दो चरणों में विभाजित किया जायेगा। प्रथम चरण का शीर्षक **'मधु कांकरियां का व्यक्तित्व'** रहेगा। जिसमें मधु कांकरिया का जन्म, माता–पिता और परिवारजन, शिक्षा–दीक्षा,

वैवाहिक जीवन और आर्थिक स्थिति के साथ ही उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

दूसरे चरण का शीर्षक **'मधु कांकरिया का कृतित्व'** रहेगा। जिसमें मधु कांकरिया द्वारा लिखित उपन्यास, कहानी और अन्य गद्य विधाओं का सामान्य परिचय के रूप में विश्लेषित किया जायेगा। इसके साथ ही मधु कांकरियां के उनके साहित्य के उपलक्ष में विविध सम्मान और पुरस्कारों की चर्चा भी की जायेगी।

तृतीय अध्याय– महानगरीय जीवन बोध का सैध्दांतिक स्वरूप :

यह अध्याय अनुसंधान की वैचारिक और विषय की दृष्टि से नीव है। इसलिए महानगरीय जीवन का अर्थ, परिभाषा और भारतीय महानगरीय जीवन का स्वरूप इन सैध्दांतिक बिन्दुओं के द्वारा प्रस्तुत अध्याय को तथ्यात्मक दृष्टि से विश्लेषित किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय– इक्कीसवीं सदी के उपन्यास में महानगरीय जीवन बोध की परंपरा और मधु कांकरियां :

चतुर्थ अध्याय में मधु कांकरियां के समकालीन उषा प्रियवंदा, अलका सरावगी, ममता कालिया, सुषमा बेदी, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, सुधा अरोडा आदि महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में आया महानगरीय जीवन बोध की परंपरा का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा। और इस महिला लेखन परंपरा में मधु कांकरियां की महानगरीय जीवन सोच और उनके साहित्यिक योगदानों का भी जायजा लिया जायेगा।

पंचम् अध्याय– मधु कांकरियां के उपन्यास और महानगरीय सामाजिक समस्याएं :

इस महत्वपूर्ण अध्याय को दो चरणों में विभाजित करके तथ्यात्मक प्रस्तुती की जायेगी। प्रथम चरण में **'सामाजिक समस्या की अवधारणा'** को सैध्दांतिक दृष्टि से विश्लेषित किया जायेगा और उसके बाद दूसरे चरण में **'मधु कांकरियां के उपन्यासों में अभिव्यक्त महानगरीय जीवन बोध'** को 'पत्ताखोर', 'खुले गगन के लाल सितारे', 'सलाम आखिरी', 'सेज पर संस्कृत' और 'ढंलती सांज के सूरज' इस प्रमुख उपन्यासों में चित्रित वेश्यावृत्ति, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, युवाओं में नशावृत्ति, नक्सली, गरीबी, जैसी कई सामाजिक समस्याओं का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

षष्ठम् अध्याय– मधु कांकरियां के उपन्यास और महानगरीय मूल्य संस्कृतिः

प्रस्तुत अध्याय में मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन संस्कृति, महानगरीय जीवन मूल्यों का विस्तार से अध्ययन किया जायेगा।

सप्तम् अध्याय– मधु कांकरियां के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन की प्रासंगिकता और सुझाव :

प्रस्तुत अनुसंधान का यह उपयुक्त अध्याय है, जिसमें मधु कांकरियां के उपन्यासों में विश्लेषित सामाजिक समस्याओं की, प्रासंगिकता को कई वर्तमान पत्र–पत्रिकाओं में छपी महानगरीय समस्याओं का ब्यौरा उनके आंकडों की प्रस्तुती का यथार्थ वर्णन किया जायेगा। और इन प्रासंगिक महानगरीय सामाजिक समस्याओं का समाधान के रूप में मधु कांकरियां के उपन्यासों में क्या सकारात्मक उपाय या सुझाव मिलते हैं इसका भी अध्ययन विस्तार से किया जायेगा।

- उपसंहार और निष्कर्ष :

प्रस्तुत अनुसंधान के सभी अध्यायों का सारांश रूप में तथ्यात्मक क्रमगत से विश्लेषणात्मक वर्णन किया जायेगा। और इसके बाद प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्यों और पूर्वानुमान की दृष्टि से सकारात्मक निष्कर्षों की उपलब्धि को प्रस्तुत किया जायेगा।

- **संदर्भग्रंथ सूची (References Books) :**

अ) मूलग्रंथ सूची :

1. सुशीला टाकभौरे, शिकंजे का दर्द (आत्मकथा), प्रथम संस्करण वाणी प्रकाशान, नई दिल्ली, 2011
2. मधु कांकरिया, खुले गगन के लाल सितारे, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. संस्करण, 2011
3. मधु कांकरियां, सलाम आखिरी, राजकमल पेपर बैक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
4. मधु कांकरिया, पत्ताखोर, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली, प्र.सं. 2005
5. मधु कांकरियां, ढलती सांझ के सूरज

आ) सहायक ग्रंथों की सूची :

1. रामजी यादव, सामाजिक समस्याऐ रावत, पब्लिकेशन, जयपुर सं. 2010
2. डॉ. आर. बी. ताम्रकर, प्रमुख सामाजिक अवधारणाएं, प्रकाशन, रामप्रसाद ॲन्ड सन्स आग्रा
3. डॉ. वी. एन. सिंह, भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याएं
4. कृष्णकांत, इक्कीसवीं सदी की ओर राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2001
5. पुष्पपाल सिंह, 21 वीं शती का हिंदी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम सं. 2010

6. डॉ. अशोक बाचुळकर, हिंदी उपन्यासों में महानगरीय अवबोध, श्रृति पब्लिकेशन जयपुर
7. डॉ. बरसाती कहार, हिंदी उपन्यासों में प्रतिबिंबीत महानगर
8. क्षमा गोस्वामी, नागरीकरण और हिंदी उपन्यास, जयश्री प्रकाशन, दिल्ली
9. बाबासाहेब कोकाटे, हिंदी साहित्य में महानगरीय नारी जीवन
10. डॉ. रेखा फसारिया, आधुनिक कथा साहित्य में चित्रित औद्योगिकीकरण
11. डॉ. ललिता राठोड, डॉ. ओमप्रकाश झंवर, 21 वीं शती का वैश्वीक हिंदी साहित्य
12. डॉ. श्रीमती उमेश माथुर, युग की हिंदी लेखिकाएं, दिगदर्शन चरण जैन ऋषभ जैन एण्ड, दरियागंज दिल्ली
13. डॉ. भ. अ. राजुरकर, डॉ. राजकमल बोरा, हिंदी अनुसंधान का स्वरूप, नॅशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली
14. डॉ. भ. अ. राजुकर, डॉ. राजमल बोरा, साहित्य शोध के आयाम, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
15. सं. डॉ. नवीनचंद लोहनी, नयी सदी के उपन्यास, भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004
16. डॉ. एम. वेंकटेश्वर, हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, अन्नपूर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
17. सं. डॉ. शगुफ्ता नियाज, अनुसंधान शोध त्रेमासिक जनवरी–जून 2015
18. देशबंधु, हिंसक होती महानगरीय संस्कृति, 22–04–2017
19. दै. जागरण, महानगरीय जीवन की त्रासदी, 14–04–2011
20. हिंसक होती महानगरीय संस्कृति की त्रासदी, Dailhunt 14–04–2017
21. डॉ. हरदेव बाहरी, अंग्रेजी, हिंदी परिभाषिक कोश

शोध निर्देशक

डॉ. विजय शिवराम पवार

सहाय्यक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक

हिंदी विभाग

श्री गुरू बुध्दिस्वामी महाविद्यालय, पुर्णा (जं.)

तहसील पुर्णा जि. परभणी (महाराष्ट्र)

शोध–छात्रा

सरिता मनोहर डोंगरे

पीपल्स कॉलेज, नांदेड